स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 3; Number :9
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

आज के विद्यालयों की विशाल योजनाएं हैं। उनमें भाषा, साहित्य, कला, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, खगोल– ये सारे विषय सिखाए जाते हैं, पर इनके साथ भावों के परिष्कार की बात नहीं है। इसे आवश्यक भी नहीं माना गया है। आज आवश्यक माना जाता है भाषा, साहित्य, कला आदि का अध्ययन जिससे अच्छी जीविका कमाई जा सके, बौद्धिक स्तर ऊँचा उठ सके, दूसरे राष्ट्रों के साथ अच्छा सम्पर्क स्थापित किया जा सके। व्यवसाय और सम्पर्क का विकास किया जा सकता है किन्तु मूल में जो चरित्र की कमी है, वह अन्य सब चीजों को खोखला बना डालती है। जब चरित्र नहीं होता तब नींव कमजोर हो जाती है। पता नहीं, शिक्षाशास्त्रियों और शिक्षा नीति का निर्धारण करने वालों का क्या दृष्टिकोण बना कि उन्होंने विद्यालयों के लिये अनेक योजनाएं बनाई, अनेक प्रारूप तैयार किये, पर किसी में भी चरित्र–विकास की योजना सन्निहित नहीं की, संवेग–नियंत्रण की योजना सम्मिलित नहीं की। इसका मतलब यह हुआ कि हमारी नींव कमजोर रह गई और उस कमजोर नींव पर बढ़िया मकान बन गया; पर वह मकान कभी भी धाराशाही हो सकता है। **आ.महाप्रज्ञ।**

रक्तदान : जीवन दान

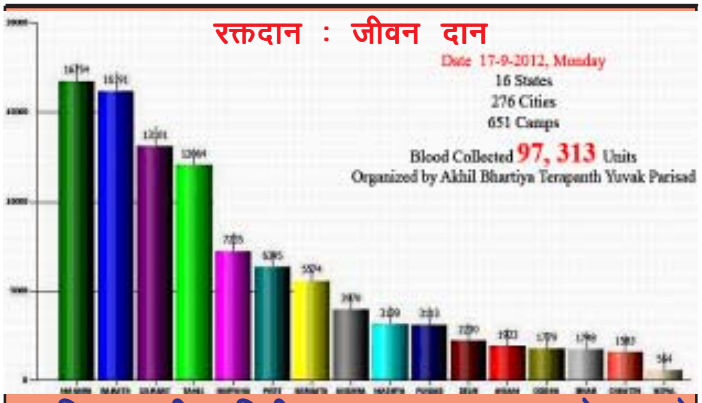

महाभियान की अद्वितीय सफलता पर अ.भा.ते.यु.प.को जीवन विज्ञान अकादमी परिवार की हार्दिक बधाई।

तेरापंथी शिक्षण संस्था प्रतिनिधि सम्मेलन सम्पन्न

''तेरापंथी शिक्षण संस्थान प्रतिनिधि सम्मेलन दिनांक 26.07.2012'' की निरन्तरता में पूज्यप्रवर की दृष्टिनुसार तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के संचालक/प्रतिनिधियों का एक आवश्यक सम्मेलन दिनांक 15 सितम्बर, 2012 को पूज्य प्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, जसोल में आयोजित हुआ, जिसमें देशभर से निम्नलिखित 34 विद्यालयों के 45 प्रतिनिधि उपस्थित हुए–1. महाप्रज्ञ स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, आसीन्द, 2. डॉल्फिन इंटरनेशनल स्कूल,आसीन्द, 3.सेठ सागरमल सुराणा जैन गर्ल्स सी.सै.स्कूल, सिरसा, 4. तुलसी निकेतन रेसिडेन्सियल विद्यालय, उदयपुर, 5. श्री तुलसी प्रा.वि., डीसा, बनासकांठा, 6.जय तुलसी आध्यात्मिक विद्यालय, डीसा, बनासकांठा, 7.संत महाप्रज्ञ स्कूल, जगराओ, 8.तेरापंथ जैन विद्यालय, पट्टालम, चैन्नई, 9. जय तुलसी विद्या विहार, होसपाल्या, बैंगलोर, 10. आदर्श बाल विद्या मंदिर, मोमासर, 11. एस.एम.एस. जैन पब्लिक सी. सै. स्कूल, मोमासर, 12.श्री गांधी बालिका उ.मा.वि.,सुजानगढ़, 13.श्री ओसवाल उ.मा.वि., सुजानगढ़, 14. बाल मंदिर उ.मा.वि. सरदारशहर, 15. गुरुकुल इंग्लिश मिडियम सी. सै. स्कूल, जसोल, 16. विमल विद्या विहार सी.सै. स्कूल, लाडनूँ ,**क्रमशः पृ..2.पैरा.2**

आओ हम जीना सीखें : जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

व्यक्ति अपनी दृष्टि को सम्यक् बनाए, चिन्तन को प्रशस्त बनाए और मनुष्य जीवन की महत्ता को समझे, यह अपेक्षित है। इन्सान में भगवान बनने की सामर्थ्य है। आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। पशु–पक्षी जगत में वह नहीं है। देव भी भगवान को प्राप्त नहीं हो सकते। एक मात्र मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो विकास के परम शिखर को छू सकता है। इस दृष्टि से मनुष्य–जीवन का बहुत बड़ा महत्व है। मनुष्य में सोचने की सामर्थ्य है, विवेक–चेतना है। वह धर्म का आचरण कर सकता है। मनुष्य और पशु के बीच भेदरेखा खींचने वाला धर्म ही है। नीतिकारों ने कहा है – आहार, निद्रा, भय, मैथुन; इन चारों बातों की मनुष्य और पशु में समानता है। एक धर्म अथवा विवेक ही ऐसा तत्त्व है, जिसके आधार पर पशु से मनुष्य की अलग पहचान होती है। मनुष्य की दृष्टि में ही सृष्टि है। चिन्तनीय बिन्दु है कि दृष्टि कहां टिकी है? **आचार्य महाश्रमण।**

महाविद्यालयी विद्यार्थियों का जीवन विज्ञान शिविर

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ, महाराजा गंगासिंह विश्व–विद्यालय, बीकानेर, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर से सम्बद्ध तथा जीवन विज्ञान–जैन विद्या पाठ्यक्रम संचालित महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का एक दिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर दिनांक 19.09.2012 को पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में, तेरापंथ भवन जसोल में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित महाविद्यालयों का प्रतिभागित्व रहा– दर्शनशास्त्र विभाग, ज.ना.व्यास वि.वि.,जोधपुर; आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, लाडनूँ; आचार्यश्री महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलैन्स, आसीन्द; श्री जैन तेरापंथ महाविद्यालय राणावास; राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ; श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय, ब्यावर तथा श्री आत्मवल्लभ जैन कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर।

शिविर का प्रारम्भ मुनिश्री नीरजकुमार द्वारा प्रस्तुत मंगलगीत – ''शिक्षा में लागू हो जाये यदि जीवन विज्ञान'' से हुआ। आगन्तुक विद्यार्थियों एवं व्याख्याताओं को सम्बोधित करते हुए पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि 'महाविद्यालय के विद्यार्थी परिपक्वता की ओर बढ़ने वाली पीढ़ी है। यह समय संस्कारों को ग्रहण करने की आयु का है। मनुष्य यदि स्वच्छन्दता का त्याग कर अनुशासन को अपनाता है तो वह मोक्ष का भागी बनता है। जहां संयम एवं आत्मनियंत्रण नहीं होता वहां मनुष्य दुःखी होता है। जीवन के संतुलित विकास के लिये अनुशासन **क्रमशः पृ...2.. पैरा 1**

अहिंसा : मुनि किशनलाल

अहिंसा जीवन का आधार है। अहिंसा व्यक्ति को जोड़ती है और हिंसा व्यक्ति को तोड़ती है। जीवन विज्ञान का ध्येय है – स्वस्थ समाज की संरचना। वही समाज स्वस्थ समाज कहलाता है जहां समाज के प्रत्येक सदस्य में परस्पर जुड़ाव हो। जीवन विज्ञान का ध्येय सूक्त हैं – स्वस्थे चित्ते बुद्धय प्रस्फुरन्ति, अर्थात् स्वस्थ चित्त में ही स्वस्थ बुद्धि का निवास होता है। अतः कहा जा सकता है कि आपसी प्रेम एवं भाईचारे की भावना हेतु बुद्धि का निर्मल होना भी आवश्यक है। समाज के दो रूप हैं – स्वस्थ और रुग्ण।

हिंसक समाज – रुग्ण : जिस समाज में प्रामाणिक और प्रेमपूर्ण व्यवहार नहीं होता। जहां एक–दूसरे को धोखा देने की मनोवृत्ति होती है। जिस समाज के सदस्य स्वार्थी, सुविधाभोगी और लालची होते हैं। जहां कमजोर वर्ग का शोषण किया जाता है। ऐसा समाज रुग्ण समाज कहलाता है।

अहिंसक समाज – स्वस्थ : जिस समाज में परस्पर प्रेमपूर्ण एवं प्रामाणिक व्यवहार होता है। जिस समाज के सदस्य कर्मठ, उत्साही एवं उदार मनोवृत्ति वाले होते हैं। जहां सम्प्रदाय, वर्ग, जाति एवं लिंग के आधार पर किसी को ऊंचा–नीचा नहीं मानते हुए समान व्यवहार होता है। जहां बलपूर्वक दूसरों के अधिकारों का हनन नहीं किया जाता। आत्मतुल्यता की भावना से सबको एक माना जाता है। ऐसा समाज स्वस्थ समाज कहलाता है।

प्रयोग – धैर्य की अनुप्रेक्षा –

1. सुखासन में स्थिरता से बैठकर ज्ञान मुद्रा लगाएं। नौ बार महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करें। कायोत्सर्ग कर शरीर को शिथिल करें।

2. अनुप्रेक्षा करें – ''मैं निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूंगा। आक्रमण नहीं करूंगा।'' इस शब्दावली का नौ बार उच्चारण एवं नौ बार मानसिक जप करें।

3. महाप्राण ध्वनि से प्रयोग सम्पन्न करें।

क्रमशःपृ..1..पैरा.2 एवं संयम महत्वपूर्ण है। पूज्यप्रवर ने जैन विद्या एवं जीवन विज्ञान को प्राचीन भारतीय विद्या बताते हुए इनके अध्ययन की प्रेरणा दी। उन्होंने सभी को नशामुक्ति का संकल्प दिलवाते हुए कहा कि नशा नाश का द्वार है। नशामुक्त जीवन जीने से परिवार, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण होता है। सभी संभागियों ने नशा न करने का संकल्प ग्रहण कर पूज्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

मंत्री मुनि ने कहा कि जीना वह सार्थक होता है जिसमें स्वयं को और दूसरों को भी आनन्द की अनुभूति हो। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आपने कहा कि यदि शिक्षा के साथ श्रमनिष्ठा एवं धैर्य नहीं आया तो शिक्षा व्यक्ति के दिमाग को भारी बनाती है। जीवन विज्ञान केवल सीखने का नहीं बल्कि जीवन जीने का विज्ञान है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान शिक्षा जगत को अमृत अनुदान है। लोग विषाद में जी रहे हैं, तनाव बढ़ रहे हैं। जीवन विज्ञान के माध्यम से जीवन को विषाद एवं तनावमुक्त किया जा सकता है। आनन्दपूर्ण जीवन जीने की व्यवस्था ही जीवन विज्ञान है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की योग प्रशिक्षिका निर्मला भास्कर ने कहा कि जैन विश्व भारती आध्यात्मिक वातावरण का केन्द्र है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय ने महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। नारी शिक्षित होने से परिवार स्वर्ग बन जाता है। इससे पूर्व जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत ने आगन्तुक व्याख्याता एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान केवल पुस्तकीय पाठ्यक्रम ही नहीं अपितु जीवनचर्या का अभिन्न अंग बनें। सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने पॉवर प्वाइंट के माध्यम से जीवन विज्ञान का परिचय प्रस्तुत किया।

विद्यार्थियों ने सीखे स्मृति विकास के गुर

लाडनूँ 3 सितम्बर। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत 'जीवन विज्ञान दिवस' के उपलक्ष्य में जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ द्वारा स्थानीय सैनिक सीनियर सैकण्डरी विद्यालय में जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कक्षा 12 के विज्ञान, वाणिज्य एवं कला वर्ग के लगभग 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने कहा कि जीवन विज्ञान एक सर्वांगीण शिक्षा पद्धति है। जीवन को सही तरीके से जीने हेतु इसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ प्रायोगिक अभ्यास भी करवाये जाते हैं। उन्होंने स्मरण शक्ति कमजोर होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए स्मृति विकास के प्रयोगों का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विद्यालय निदेशक केसाराम हुडा ने संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत एवं सहायक निदेशक हनुमान शर्मा का स्वागत किया। जीवन विज्ञान के प्रयोगों को समझ कर अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान हमें जीवन को सही तरीके से जीना सिखाता है। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय की छात्रा पूनम कागट ने आभार ज्ञापित कर पुनः ऐसी कार्यशालाओं के आयोजन की अपेक्षा जताई।

क्रमश..पृ.1.पैरा.1 17. भगवान महावीर बाल मंदिर मा.वि, टॉडगढ़, 18. श्री जैन श्वे. शिक्षा समिति, जयपुर, 19.महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल, उदयपुर, 20. अर्हम् इंग्लिश अकेडमी, भीनासर, 21.अर्हम् विद्या भारती, बीकानेर, 22. अर्हम् टिन्नीटोट्स स्कूल, बीकानेर, 23. जय तुलसी विद्या विहार उ.मा.वि.नोखा, 24. प्रि–स्टार पब्लिक स्कूल, छोटी खाटू, 25. जय तुलसी विद्या विहार, छोटी खाटू, 26. तुलसी अमृत विद्यापीठ, आमेट, 27. आचार्यश्री तुलसी तेरापंथी उ.मा.वि. बालोतरा, 28. आचार्य तुलसी उ.मा.वि.,दौलतगढ़, 29. तुलसी अमृत उ.मा.वि. कानोड़, 30. तुलसी अमृत निकेतन, कानोड़, 31.अणुव्रत बाल भारती उ.मा.वि. छापर, 32. अणुव्रत विद्या मंदिर उ.प्रा.वि. पड़िहारा, 33. तुलसी बाल विद्या मंदिर हा.सै.स्कूल, पेटलावद, 34. महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर।

आचार्यश्री ने पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि – ''आप सभी ने हमारी शिक्षण संस्थाओं के उत्थान एवं उनके माध्यम से शिक्षा एवं संस्कार की उत्तम व्यवस्था पर विचार किया होगा। मेरी दृष्टि में हमारे विद्यालयों में सामंजस्य, समन्वय आदि के लिये तेरापंथ समाज द्वारा संचालित विद्यालयों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करते हुए जैन विश्व भारती, लाडनूँ के अन्तर्गत एक अधिकार सम्पन्न समिति का गठन करना ठीक हो सकता है। यह समिति बनने से सबको अपनी बात कहने का एवं नई जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इस समिति में मुख्य रूप से तेरापंथ समाज, तेरापंथी सभा, अणुव्रत समिति द्वारा संचालित विद्यालयों को शामिल किया जाये। व्यक्तिगत रूप से संचालित विद्यालय भी यदि चाहें तो इसमें सम्मिलित हो सकते हैं। हमारे विद्यालयों में शिक्षा का स्तर ऊँचा हो, शिक्षक सेवाभावी एवं प्रशिक्षित हों, जैन विद्या, जैन दर्शन, जीवन विज्ञान अच्छी प्रकार से लागू हो तथा इनके माध्यम से परिवर्तन भी दिखाई दे। आप सभी इन बातों पर गहराई से विचार करें।''

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने कहा कि हमारे विद्यालय अर्थोपार्जन के साधन नहीं बल्कि उन्नत शिक्षा एवं उच्च संस्कार देने के केन्द्र बनने चाहिए। हमें अपने सभी विद्यालयों में एकता, एकरूपता, एक नाम, एक गणवेश, एक डायरी, एक प्रार्थना एवं जीवन विज्ञान को विषयरूप में लागू करने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लार्ड मैकाले द्वारा प्रस्तुत शिक्षा पद्धति ने हमारी मानसिकता में परिवर्तन किया, जो हमें हमारी संस्कृति एवं परम्परा से दूर ले जाने वाली है। मुनिश्री ने बताया कि नकारात्मक सोच को त्याग कर सकारात्मक विचारों के माध्यम से सही परिवर्तन किया जा सकता है। समागत महानुभावों ने अपना संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि केन्द्र की दृष्टि अनुसार उन्हें जो भी कार्य दिया जायेगा, उसे वे पूरा करेंगे। कार्यक्रम का संचालन एवं व्यवस्थाओं में जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत एवं सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।